डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
मोबाइल नंबर- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 2 (H) दिनांक - 18-08-2020

विषय- व्याकरण

अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव समास में दो पद होते हैं। प्रथम पद प्रायः अव्यय (उपसर्ग या निपात) होता है और द्वितीय पद संज्ञा शब्द। समस्त पद नपुंसक लिंग एकवचन के तुल्य प्रयुक्त होता है। अव्ययीभाव समास वाला पद अव्यय होता है। जैसे -अधिहरि (हरी में), अन्त गिरि (पहाड़ में) आदि। अव्ययीभाव समास में अंतिम दीर्घ स्वर को ह्रस्व हो जाता है। ए, ऐ को इ हो जाता है और ओ को उ हो जाता है । गोपायति गा: पातीति वा गोपा:। तस्मिन्निति अधिगोपम्, अनुविष्णु आदि।

अव्ययीभाव समास से होने वाला शब्द नपुंसक लिंग होता है और अकारांत शब्द की पंचमी विभक्ति को छोड़कर सभी स्वादि विभक्तियों के स्थान में 'अम्' हो जाता है। केवल तृतीया और सप्तमी के स्थान में विकल्प से 'अम्' होता है। यथा - अधि गोपं कृष्ण:, अधिगोपं कृष्णौ, अधि गोपं अधिगोपेन वा कृष्णेन । अधि गोपं कृष्णाय, अधिगोपात् कृष्णात्, अधिगोपं कृष्णस्य, अधिगोपम्, अधिगोपे वा कृष्णे।

अव्ययीभावे चाकाले

अव्ययीभाव समास में काल से भिन्न अर्थ में सह को स आदेश होता है । जैसे -हरे: सादृश्यम् सहरि: - 'हरि टा सह' इस अलौकिक विग्रह में यथा = सादृश्यवाची शब्द के साथ समास आदि तथा अव्ययीभावे चाकाले' सूत्र से सह को स आदेश होने पर 'सहरि:' सिद्ध होता है।

यावत का निश्चित परिणाम अर्थ में किसी भी सुबन्त के साथ समास होता है । जैसे- यावन्त: श्लोका: तावन्त: अच्युतप्रणामा:-- यावच्छ्लोकम् (जितने श्लोक है, उतनी बार अच्युत या विष्णु को प्रणाम किया गया है।) इसी प्रकार यावान् अवकाश: तावान् अभ्यास: -- यावदवकाशम् अभ्यास: आदि।

मात्रा अर्थ में प्रति का सुबन्त के साथ समास होता है और यह अंत में रखा जाता है । शाकस्य लेश: - शाकप्रति (नाममात्र को साग) वृक्षं वृक्षं प्रति विद्योतते विद्युत्, यहाँ पर प्रति ओर अर्थ में है।

अक्ष, शलाका और संख्यावाचक शब्द का परि के साथ समास होता है और इन शब्दों का परि से पहले प्रयोग होता है। जूए में पराजय अर्थ में यह समास होता है । अक्षेण विपरितं वृतम्- अक्षपरि (पास के ठीक न पड़ने से हार हुई) शलाकापरि-(शलाका अर्थात सीकों से खेले जाने वाले खेल में सींक ठीक न पड़ने से हार होना) आदि।

अप्, परि, बहिः और अञ्च् धातु से बने हुए शब्दों (प्राच्, प्रत्यच्, उदच्, अवाच्, तिर्य च् आदि) का पंचम्यन्त शब्दों के साथ विकल्प से अव्ययीभाव समास होता है । अप विष्णु -अप विष्णु विष्णोः (विष्णु से अलग), परिविष्णु- परि विष्णोः, बहिर्वनम् -बहिर्वनात्, प्राग्वनात् (वन से पूर्व की ओर) आदि।

पार और मध्य शब्दों का षष्ठयन्त के साथ विकल्प से अव्ययीभाव समास होता है । पार और मध्य का पूर्व प्रयोग होता है और ये एकारांत हो जाते हैं । जैसे पारे गङ्गात्, मध्येगंगात् (गंगा के पार या बीच से) । पक्ष में षष्ठी तत्पुरुष भी होता है। गंगापारात्, गंगामध्यात्। यहां पर पंचमी का प्रयोग अपवाद रूप से है। यदि सप्तमी का अर्थ होगा तो अंतिम स्वर को अम् हो जाएगा। जैसे- पारेगङ्गम्, मध्येगङ्गम्।

संख्यावाची शब्द का किसी सुबन्त के साथ विकल्प से अव्ययीभाव समास हो जाता है, यदि विद्या या जन्म से कोई संबंध सूचित होता हो तो। द्वौ मुनी वंश्यौ- द्विमुनि, व्याकरणस्य त्रिमुनि (पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि) आदि।

संख्यावाचक शब्दों का नदी वाचक शब्दों के साथ समाहार अर्थ में अव्ययीभाव समास होता है । सप्तगङ्गम्, द्वियमुनम्।

नदी वाचक शब्दों के साथ किसी भी शब्द का अव्ययीभाव समास हो जाता है यदि समस्त पद संज्ञावाचक होता है। जैसे उन्मत्त गंगम्, लोहितगंगम् आदि।